विचार प्रवाह

क्या भारत का युवा 'वैश्विक प्रतिभा' है या सस्ता श्रम? –एक कड़वा सच

उड़ चले पंख लेकर सपनों के आसमान में,
पर लौटे तो पाया–अपने ही घर में स्थान नहीं

भारत आज एक ऐसे द्वंद्व के बीच खड़ा है, जहाँ उसकी सबसे बड़ी ताकत–उसकी युवा प्रतिभा–ही सबसे बड़ा प्रश्न बनती जा रही है। विश्व मंच पर भारतीय युवाओं की मांग निरंतर बढ़ रही है। उन्हें ग्लोबल टैलेंट कहा जाता है, उनकी मेहनत, अनुशासन और दक्षता की सराहना होती है। परंतु इसी चमक के पीछे एक कड़वी सच्चाई भी छिपी है–क्या यह सम्मान है, या सुनियोजित तरीके से सस्ते श्रम का उपयोग?

यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, मिडल ईस्ट, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड जैसे देशों में भारतीय युवाओं की उपस्थिति निश्चित ही अवसरों का संकेत देती है, परंतु इन अवसरों की प्रकृति पर गंभीर प्रश्न उठते हैं। एक ही कार्य के लिए जहाँ स्थानीय नागरिकों को उच्च वेतन और बेहतर सुविधाएँ मिलती हैं, वहीं भारतीय युवाओं से वही काम अपेक्षाकृत कम पारिश्रमिक और अधिक दबाव में कराया जाता है। यह केवल आर्थिक अंतर नहीं,

बल्कि उस मानसिकता का प्रतिबिंब है जहाँ विकासशील देशों की प्रतिभा को कुशल पर सस्ता मान लिया गया है।

कीमत लगी हुनर की, पर कीमत भी अधूरी थी,
जिसे समझे थे सम्मान, वो बस मजबूरी थी

स्थिति और भी जटिल तब हो जाती है जब हम अपने ही देश के भीतर झांकते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में अपने कार्यालय स्थापित कर यहाँ के युवाओं से वैश्विक कार्य करवाती हैं। यह व्यवस्था रोजगार का आभास देती है, परंतु वास्तविकता में यह एक ऐसा तंत्र बनाती है जिसमें भारतीय युवा अपने ही देश में वैश्विक अर्थव्यवस्था के लो-कॉस्ट इंजन बन जाते हैं। प्रतिभा यहाँ तैयार होती है, पर उसका वास्तविक मूल्य और लाभ कहीं और स्थानांतरित हो जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी यह विडंबना स्पष्ट है। विदेशी विश्वविद्यालयों की आकर्षक छात्रवृत्तियाँ, उवल करियर के वादे और अंतरराष्ट्रीय एक्पोजर का सपना– ये सब मिलकर एक ऐसा आकर्षण पैदा करते हैं जिसे नज़रअंदाज़ करना आसान नहीं। परंतु जब अनेक छात्र इन सपनों के साथ विदेश पहुँचते हैं, तो उन्हें आर्थिक दबाव, सांस्कृतिक असंगति और अनिश्चित रोजगार के कठोर यथार्थ का सामना करना पड़ता है, और सबसे बड़ा झटका तब लगता है, जब वे शिक्षा पूरी कर भारत लौटते हैं। उनकी डिग्री, उनका अनुभव–जो विदेश में मूल्यवान था–अक्सर यहाँ सीधे उपयोगी नहीं बन पाता। उन्हें फिर से स्थानीय मान्यता, अतिरिक्त प्रशिक्षण या अनुभव की आवश्यकता होती है।

अर्थात, वे एक बार नहीं, दो बार संघर्ष करते हैं–पहले विदेश में स्थापित होने के लिए, और फिर अपने ही देश में स्वयं को पुनः स्थापित करने के लिए।

सीखा बहुत था दूर देश में, पर यहाँ वो काम न आया,
फिर से खुद को गढ़ने का, एक और दौर दोहराया

यह प्रश्न केवल व्यवस्था का नहीं, दृष्टिकोण का भी है।

क्या हम अपने युवाओं को इस दिशा में अनजाने में धकेल रहे हैं?

सरकार की भूमिका यहाँ निर्णायक है। उसे ऐसी नीतियाँ बनानी होंगी जो न केवल विदेशी रोजगार और शिक्षा को पारदर्शी बनाएँ, बल्कि भारतीय प्रतिभा के शोषण को भी रोकें। विदेश से लौटे युवाओं के लिए कौशल-मान्यता की स्पष्ट व्यवस्था, उद्योगों के साथ समन्वय और देश में ही उच्च स्तरीय अवसरों का निर्माण समय की मांग है।

समाज को भी आत्ममंथन करना होगा। जब तक विदेश जाना ही सफलता का प्रतीक बना रहेगा, तब तक यह प्रवृत्ति नहीं बदलेगी। हमें सफलता की परिभाषा को पुनः गढ़ना होगा–जहाँ आत्मनिर्भरता, नवाचार और सामाजिक योगदान को भी समान महत्व मिले।

परिवारों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अक्सर वे अनजाने में अपने बच्चों को केवल आर्थिक आकर्षण और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर विदेश जाने के लिए प्रेरित करते हैं। परंतु यह आवश्यक है कि वे उन्हें वास्तविक परिस्थितियों, जोखिमों और दीर्घकालिक प्रभावों से भी अवगत कराएँ।

और अंततः, युवा स्वयं–उन्हें यह समझना होगा कि उनका कौशल केवल एक नौकरी पाने का माध्यम नहीं है, बल्कि एक पहचान बनाने का साधन है।

हर अवसर को स्वीकार करने से पहले यह प्रश्न पूछना आवश्यक है–क्या यह अवसर मेरे ज्ञान और आत्मसम्मान के अनुरूप है?

जो खुद को पहचान ले, वही राह बना पाता है,
वरना भीड़ के पीछे चलकर, बस खो ही जाता है

आज आवश्यकता है एक संतुलित और सजग दृष्टिकोण की। विदेश जाना समस्या नहीं है, परंतु बिना समझे, बिना तैयारी के और केवल आकर्षण में बहकर जाना निश्चित ही संकट का कारण बन सकता है।

भारत के पास प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या हम उस प्रतिभा का सम्मानपूर्वक उपयोग कर पा रहे हैं, या उसे सस्ते संसाधन में बदलने दे रहे हैं? यदि यह प्रवृत्ति यूँ ही जारी रही, तो ब्रेन ड्रेन का स्थान ब्रेन एक्सप्लॉइटेशन ले लेगा–जहाँ हमारी बुद्धिमत्ता का उपयोग तो होगा, पर उसका वास्तविक लाभ हमें नहीं मिलेगा।

वक्त है अब सोच बदलने का, पहचान नई बनाने का,
वरना इतिहास लिखेगा फिर–हमने खुद को ही खो दिया

– डॉ. शिशिर पंडित,
(लेखक पर्यावरणविद् एवं प्रशासनिक अधिकारी है)

कार्टून कोना

recreation

विद्योत्तमा फाउंडेशन इंदौर इकाई द्वारा

इंदौर में सजी साहित्य साधना की सरस संध्या

इंदौर। साहित्य, संस्कृति और सृजन की गरिमा से ओतप्रोत एक भव्य साहित्यिक आयोजन का साक्षी बना इंदौर, जब विद्योत्तमा फाउंडेशन इंदौर इकाई द्वारा सभी पदस्त समिति सदस्यों का शपथ ग्रहण के गरिमामय कार्यक्रम का मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति में सफल आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष साहित्यकार आदरणीय सुबोध मिश्र जी (रिटायर्ड भारतीय जल सेना)ने की,कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध व्यंग्यकार एवं प्रेमचंद सृजन पीठ उज्जैन के निदेशक आदरणीय मुकेश जोशी जी, विचार प्रवाह साहित्य मंच इंदौर के अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष इंदौर प्रेस क्लब के श्री मुकेश तिवारी जी उपस्थित रहे,वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रसार मंत्री हिंदी साहित्य समिति के आदरणीय श्री हरे राम बाजपेई

जी तथा मातृभाषा उन्नयन संस्थान के अध्यक्ष एवं साहित्य ग्राम पत्र के संपादक आदरणीय डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' जी की गरिमामई उपस्थिति रही।

संचालन साहित्यकार श्रीमती स्वाति सिंग राठौर साहिबा द्वारा किया गया। उन्होंने अपनी सशक्त वाणी, भावपूर्ण अभिव्यक्ति और सुसंगठित संचालन शैली को प्रस्तुत किया। अतिथियों का स्वागत संस्था की सामाजिक सचिव डॉ. आरती दुबे द्वारा किया गया।संरक्षक डॉ सुधा चौहान ने इंदौर इकाई के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की।इसके उपरांत इंदौर इकाई के अध्यक्ष दिनेश तिवारी 'उपवन' ने विद्योत्तमा फाउंडेशन की स्थापना के उद्देश्य पर प्रकाश डाला ।

इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह भी संपन्न हुआ। जिसके अंतर्गत दिनेश तिवारी उपवन ने अध्यक्ष, डॉ सुधा चौहान ने संरक्षक पद , उपाध्यक्ष पद पर संध्या बायवर और अरुण अपेक्षित , सामाजिक सचिव पद डॉ आरती दुबे और सामाजिक सह सचिव पद डॉ पूनम विशाल, साहित्य सचिव पद श्रीमती स्वाति सिंग राठौर साहिबा, साहित्यिक सह सचिव पद तेजकरण दुबे , संगठन सचिव पद संतोष मिश्रा , संयुक्त सचिव पद डॉ चेतना शर्मा और श्रीमती शीला चंदन ने, सांस्कृतिक सचिव पद डॉ विनीता चौहान और श्रीमती अंजू मोटवानी , मीडिया प्रभारी पद सुरेश माहेश्वरी शिवम् ने शपथ ली।

पुलिस मुख्यालय से 27 अधिकारियों के सेवा अभिलेख विभाग ने मांगे

राज्य पुलिस सेवा के नौ अधिकारी बनेंगे आईपीएस

इन्दौर। मध्य प्रदेश को वर्ष 2026 में नौ आइपीएस अधिकारी और मिलेंगे। इसके लिए गृह विभाग ने राज्य पुलिस सेवा से आइपीएस संवर्ग में नियुक्ति की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है।

पुलिस मुख्यालय से 27 अधिकारियों के अभिलेख मांगे हैं। इनका परीक्षण करने के बाद मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के अनुमोदन से संघ लोक सेवा आयोग को प्रस्ताव भेजा जाएगा। विभाग का प्रयास यह है कि अगस्त-सितंबर में विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठक हो जाए।

राज्य पुलिस सेवा से आइपीएस संवर्ग में नियुक्त हुए अधिकारियों की सेवानिवृत्ति पर जो पद उपलब्ध होते हैं, उतने ही अगले वर्ष फिर विभागीय पदोन्नति की प्रक्रिया के माध्यम से भरे जाते हैं। 2025 में नौ अधिकारी सेवानिवृत्त हुए, जिनके स्थान पर राज्य पुलिस सेवा के नौ अधिकारियों को आइपीएस संवर्ग में नियुक्ति का अवसर मिलेगा। सूत्रों का कहना है कि इसमें 1998 से 2000 बैच के अधिकारी होंगे।

यूपीएससी को भेजा जाएगा अंतिम प्रस्ताव

2024 की डीपीसी में कुछ नाम रोक दिए गए थे, उन्हें इस वर्ष अवसर दिया जा सकता है। सेवा अभिलेख के आधार पर नामों का चयन होगा और मुख्यमंत्री के अनुमोदन से प्रस्ताव संघ लोक सेवा आयोग को भेजा जाएगा। इस प्रक्रिया के पूर्ण होते ही राज्य पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारियों को भारतीय पुलिस सेवा में शामिल होने का अवसर प्राप्त होगा।

सम्मेदशिखर में 18 अप्रैल को मुनि प्रमाणसागर देंगे जैनेश्वरी दीक्षा

इंदौर शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर की पावन, वंदनीय धरा एक बार फिर त्याग, तपस्या और आत्मजागरण का अद्भुत दृश्य देखने जा रही है। 18 अप्रैल शनिवार का वह पावन दिवस, जब मुनि प्रमाण सागर अपने शिष्यों को जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान करेंगे।

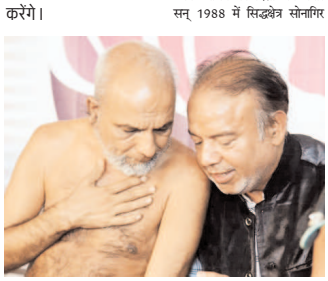

कुमार के रूप में हजारीबाग की धरती पर सेठी परिवार में जन्म लिया। छत्तीसगढ़ के दुर्ग में बाल्यकाल बिताते हुए वे गुरुदेव आचार्य विद्यासागर के दिव्य व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित होकर मात्र 18 वर्ष की आयु में उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया। युवावस्था के सपनों का त्याग कर आत्मकल्याण की राह चुनना ही उनके जीवन की दिशा बन गया। सन् 1988 में सिद्धक्षेत्र सोनागिर

केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि आत्मपरिवर्तन का युगांतकारी क्षण होगा। ऐसा प्रतीत होता है मानो 1968 का स्वर्णिम इतिहास पुनः जीवंत हो उठेगा, जब मुनि ज्ञानसागर महाराज ने एक ऐसे संत को दीक्षा दी थी, जिन्होंने आगे चलकर पूरे भारत में संयम की अलख जगाई और सैकड़ों मुनि-आर्यिकाओं को दीक्षित कर धर्मध्वजा को ऊंचा किया। उसी महान परंपरा के संवाहक मुनि प्रमाण सागर का जीवन स्वयं त्याग और तपस्या की प्रेरक गाथा है।

राष्ट्रीय प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी एवं स्थानीय मीडिया प्रभारी राजेश जैन दद्दू ने बताया कि मुनि प्रमाणसागर महाराज ने नवीन की पवित्र भूमि पर उन्होंने भव्य जैनेश्वरी दीक्षा लेकर संसार से विरक्ति का सशक्त संदेश दिया। दीक्षा के पश्चात वर्षों तक मध्यप्रदेश को कर्मस्थली बनाकर उन्होंने भगवान महावीर के अहिंसा और करुणा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाया। वर्ष 2005 में सम्मेदशिखर की तलहटी में गुणायतन और सेवायतन की स्थापना कर धर्म को आधुनिक विज्ञान और तकनीक से जोड़ने का अभिनव प्रयास किया। लाखों श्रद्धालुओं के जीवन में उन्होंने समाधान, प्रेरणा और आस्था का दीप प्रज्ज्वलित किया। शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका योगदान अत्यंत प्रेरणादायक रहा।

एनओआइपी का दो दिवसीय शैक्षणिक सत्र का आयोजन संपन्न

इन्दौर। भारतीय मजदूर संघ किसी राजनीतिक दल का सदस्य नहीं होकर राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है और अपने सदस्यों को राष्ट्र प्रथम का सन्देश देते हुए , किसी भी प्रकार के अन्याय और शोषण का विरोध करते हुए सकारात्मकता के साथ सदस्यों के आर्थिक हितों की भी रक्षा करता है।

ये विचार परामर्श समिति के अध्यक्ष अशोक जोशी ने , भारतीय मजदूर संघ से सम्बंधित संगठन , नेशनल ऑर्गेनाइजेशन आफ इंश्योरेंस पेंशनर्स (एनओआइपी) के दो दिवसीय शैक्षणिक सत्र में उद्घाटन सत्र में मुख्यअतिथि के रूप में व्यक्त किये एनओआइपी के अखिल भारतीय महासचिव राजीवकुमार शर्मा [नई दिल्ली] ने संगठन में सदस्यों की भूमिका और संगठन में वृद्धि कैसी और क्यों चाहिए विषय पर प्रभावी उद्बोधन दिया एनओआइपी के अखिल भारतीय उपमहासचिव श्री अश्विन कुमार शर्मा ने मंडल इकाई को कैसे और आगे ले जायें विषय पर प्रकाश डाला वहीं अखिल भारतीय मेडीक्लेम समिति के अध्यक्ष वी के दत्ता ने सदस्यों को मेडीक्लेम योजना की विस्तार से जानकारी दी अखिल भारतीय संगठन सचिव देवीदास पाटिल [पुणे] ने विभिन्न पोर्टल के उपयोग के बारे में समझाया शैक्षणिक सत्र को श्री अतुल पंवार, के.के.अग्रवाल, आर एस टुटेजा, सुभाष पाठक आदि ने भी संबोधित किया। सत्र में संगठन विस्तार के लिए श्री ओमप्रकाश पाठक , आर एस टुटेजा , शैलेश लेले , अंतरसिंह मोर्य का सम्मान किया गया बीमा क्षेत्र के पेंशनधारियों के इस संगठन के लगभग 50 पेंशनरों ने शिरकत की। सत्र का शुभारम्भ दीप आलोकन कर अतिथियों ने किया स्वागत भाषण अध्यक्ष राजेश सुहाने ने दिया महामंत्री अजय मिश्र ने वार्षिक गतिविधियों का ब्यौरा दिया इस अवसर पर इंदौर मंडल की नई कार्यकारिणी का भी गठन किया गया। इंदौर के राजेश सुहाने को मंडल अध्यक्ष व श्री अजय मिश्रा जी को मंडल सचिव नियुक्त किया गया। रजनीश सोनी के नेतृत्व में देवेंद्रसिंह सिसौदिया के सहयोग से संगीत निशा का आयोजन किया गया । राष्ट्रगान संचालन केन्द्रीय समिति के सदस्य श्री शैलेश लेले ने किया और आभार दिलीप पांडे ने व्यक्त किया ।

आरोग्य भारती की कार्यशाला में सीपीआर पर प्रशिक्षण संपन्न

इंदौर। गुरुकुल पब्लिक स्कूल कुशवाह नगर में आरोग्य भारती इंदौर महानगर द्वारिका जिला एवं संस्था श्रीसर्व सेवा के संयुक्त तत्वाधान में बैठक एवं सीपीआर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि आरोग्य भारती मालवा प्रांत कार्याध्यक्ष वैद्य लोकेश जोशी ने आरोग्य भारती द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न आयामों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता आरोग्य भारती इंदौर महानगर अध्यक्ष डॉ. प्रमोद नीमा ने की। सीपीआर पर निःशुल्क प्रशिक्षण एवं डेमो केयर सी एच एल हॉस्पिटल के कार्डियक विभाग के डॉ. निखिलेश जैन जी एवं उनकी टीम ने दिया। संस्था श्री सर्व सेवा के बारे में जानकारी संस्था अध्यक्ष अजय कुशवाह जी ने दिया। कार्यक्रम का संचालन आरोग्य भारती इंदौर महानगर द्वारिका जिले के अध्यक्ष डॉ.आरएन मिश्रा ने किया। आभार राजेंद्र गुप्ता ने माना। इस अवसर पर आरोग्य भारती से शिवमूरत यादव, प्रचार प्रमुख राजेश यादव, रोशन सिंह, डॉ. पवन गुप्ता, डॉ. सर्वेश मिश्रा, दुर्गेश उपाध्याय, हुकुम ,राधेश्याम बाजपेई सहित कई लोग उपस्थित थे।

मेडिकल कॉलेज में सेवा सेतु की सशक्त पहल–जनसेवा को मिला नया विस्तार

इंदौर। समाजसेवा के क्षेत्र में लगातार सक्रिय सेवा सेतु शिक्षा एवं जनकल्याण समिति ने आज चिकित्सा सेवाओं में सहभागिता को लेकर एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पहल को साकार किया। महात्मा गांधी स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय (एमजीएम) में आज समिति के प्रतिनिधिमंडल ने अधिष्ठाता डॉ. अरविंद कुमार घनघोरिया से भेंट कर स्वास्थ्य सेवाओं में सहयोग और विस्तार पर सार्थक चर्चा की।

समिति के अध्यक्ष शैलेश त्रिपाठी, उपाध्यक्ष शम्भू नाथ मिश्रा एवं सचिव सोनाली सोनार के नेतृत्व में पहुंचे प्रतिनिधिमंडल ने पूर्व में 22 फरवरी 2026 को दिए गए आवेदन के संदर्भ में अद्यतन सूची (सदस्यों के नाम व मोबाइल नंबर सहित) पुनः प्रस्तुत की। इस अवसर पर अधिष्ठाता ने समिति के कार्यों की सराहना करते हुए सेवा गतिविधियों को सकारात्मक पहल बताया।

40 सेवाभावी कार्यकर्ताओं की टीम सक्रिय

समिति द्वारा प्रस्तुत सूची में कुल 40 सक्रिय सदस्यों के नाम शामिल हैं, जो विभिन्न अस्पतालों में सेवाएं दे रहे हैं। इनमें प्रमुख रूप से –

शम्भूनाथ मिश्रा, शैलेश त्रिपाठी, सोनाली सोनार, राजकुमार तिवारी, विनोद कुमार तिवारी, देवेश कुमार सक्सेना, मोहनलाल यादव, राजेश यादव, राजीव शर्मा, शिवकांत मिश्रा, हीरालाल अंजना, शुभम मिश्रा, कैलाश मुकाती, सचिन मिश्रा, हिमांशु यादव, हेमंत शर्मा, राजेश विजयवर्गीय,जीतेंद्र भाटिया, महेंद्र कुमार वर्मा, भूपेंद्र भाटिया, किरण सिकरवार, पिंकी लांभाते, ऋतु शर्मा, नम्रता यादव, रेखा मांडलिक, दुर्गा पंवार, सरिता तिवारी, कीर्ति सेन, उदालाल बर्फा, आबिद अली, बी.आर. जाटव, मनीष सोनी, गीता मिश्रा, रीना नरवरिया, सुरेश पाठक, डाक्टर श्रीमती रजनी पाण्डेय,

जितेन्द्र महतो, दिव्येश कुमार सक्सेना, हीरालाल अंजना,बी आर जगताप, धन्नालाल परदेशी,शीला नरवरिया,शेखर जोशी, श्रीमती विभा पन्थानेसहित अन्य कार्यकर्ता शामिल हैं।

कल्पतरु जिनालय में हुए 108 जिनबिम्ब के मस्तकाभिषेक

इंदौर (ओम पाटोदी)

इंदौर इतिहास में पहली बार तीनों काल के चौबीस तीर्थंकरों के अभिषेक एक साथ एक ही दिन एक ही जगह पर सम्पन्न हुएं।यह अद्भुत नजारा जिसने भी देखा अपने आप को सौभाग्यशाली समझा। यह अलौकिक आयोजन संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महामुनि राज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री विमल

सागर जी महाराज एवं मुनि श्री अनन्त सागर जी महाराज के सानिध्य में पश्चिमी क्षेत्र की अन्तिम सीमा पर विराजमान श्री आदि वीर जिनालय कल्पतरु क्षेत्र पर सम्पन्न हुआ।

उक्त जानकारी देते हुए वर्द्धमानपुर शोध संस्थान के ओम पाटोदी एवं आयोजन समिति के अर्पित वाणी ने बताया कि मंदिर स्थापना के पश्चात यह पहला अवसर था जब इतने भव्य आयोजन के साथ मुनि भगवंतों के सानिध्य में सभी प्रतिमाओं का कलशाभिषेक सम्पन्न हुआ। एक महत्वपूर्ण आयोजन इसके साथ और जुड़ गया कि सभी प्रतिमाओं के मस्तकाभिषेक तो हुए ही साथ ही सभी प्रतिमाओं की शांति धारा हुई जो अपने आप अनुपम और अद्वितीय आयोजन बन पड़ा यह भी पहली बार हुआ।